सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष २०२१ का द्वितीय अंक आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में प्रथम लेख के रूप में देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी का वसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में आध्यात्मिक व वैज्ञानिक लेख समाहित है तथा डॉ. दयाराम स्वामी जी का संत श्री सुन्दरदासजी का जीवनचरित्र पर्याप्त प्रेरणास्पद लेख है। इसी क्रम में डॉ. कुलदीपसिंह द्वारा द्वारा लिखित 'राष्ट्रियशिक्षानीतौ (२०२०) संस्कृतम्' लेख में नई शिक्षानीति के मापदण्ड प्रदर्शित हुए हैं। इसी क्रम में डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा बलराम स्वामी जी का जीवनवृत्त प्रस्तुत किया गया है। वत्सला श्रीवास्तव ने 'कोरोना काल में समाज और साहित्य' लेख लिखा है। इसमें समाज व साहित्य के सम्बन्ध में आदर्शों के स्थायित्व को समझाने में लेखिका ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। अंजना शर्मा के 'ज्योतिषशास्त्र में नारी की भूमिका' लेख नारी सशक्तीकरण के मार्ग को प्रशस्त करता है। काव्यविधा में डॉ. ओमप्रकाश पारीक का 'पञ्चदलम्' भावानुभूतियों का रोचक प्रस्तुतीकरण करता है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरूशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्व हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा